(वेध १९९९: गीत)

पूरब की तरफ चल,
सूरज की तरफ चल ।
हिंमत को साथ लिये,
सुख की तरफ चल ।।

राह में कही-न-कही ,
दर्द भी मिलेगा ।
उसको बाँटने के लिये,
दोस्त भी मिलेगा ।।

हँसने के लिये चल,
पढने केलिये चल ।।
किस्मत को हाथ लिये,
कल की तरफ चल ।।१।।

आनेवाले कल मे होगा,
खट्टा-मीठापन ।
ज्ञान की प्रकाश में,
उठेगा खिल चमन ।।

समता की तरफ चल,
ममता की तरफ चल ।
शांती की आस लिये,
सब की तरफ चल ।। २।।